(सत्संदेश अप्रैल 1957 में प्रकाशित प्रवचन)

रूहानी सत्संग No. K-15

ईश्वर प्राप्ति का साधन

सब समाजों के ये भाई आप के दरमियान आये और अपने अपने लफ़्ज नुक्ताए-ख्याल को वाज़ेह (ब्यान) करते रहे। महापुरुष दुनिया में आये और जिस लैवल पर वे काम कर रहे थे, कर के चले गये। हमारे दिल में सबके लिए इज़्ज़त है। इस वक्त हमारे सामने मज़मून यह था कि Self-relisation या ईश्वर प्राप्ति कैसे हो? Ethical life या Objective side के तरीकों और सबसे प्यार और दया भाव के मुतल्लिक, जो परमार्थ के लिए ज़मीन की तैयारी है, वे उसका ब्यान करते रहे या महापुरुषों के जीवन के मुतल्लिक ज़िक्र कर गये।

मुअम्मा (पहेली) तो हमारे सामने यही है कि क्या परमात्मा है? भई इसके दो जवाब मिलते हैं महापुरुषों की बाणी में। मुझे शुरू से शौक़ था महापुरुषों की बाणी पढ़ने का, मुसलमान फकीरों की बाणी पढ़ने के लिए मैंने मुन्शी फाज़िल की तैयारी की। गुरबाणी तो घर की थी, मेरा कायदा यह था कि एक शब्द पढ़ लेना और उसको लिख लेना, भई आज का सबक यह मिला है, फिर उस पर विचार करना। हम लोग दो चार दस बीस सफे पढ़ लेते हैं। भई पढ़ना अच्छा है मगर उस पर पूरी तरह विचार करना, उसका तात्पर्य समझना चाहिए। तो मैं एक शब्द लिख लेता और फिर उस पर विचार करता। वहां बार बार इस बात की याद दुहरानी थी कि परमात्मा है, महापुरुषों ने उसे पाया है। किसी ऐसे महापुरुष की सोहबत करो जिसने उसे पाया है। इसके साथ साथ कुछ और ब्यान भी मिलता था। सिर्फ़ गुरबाणी ही में नहीं और महपुरुषों की बाणी में भी कि किसी ने उसको देखा नहीं। Nobody has seen God in this life. बड़े मुतज़ाद (विरोधी) जैसे ब्यानात मालूम होते हैं मगर हैं सही। परमात्मा जो Absolute God है और अदृष्ट है, जो Into being अभी नहीं आया, अपने आप में कायम बिलज़ात है उसका नाम Absolute God (अनाम) है। उसको अशब्द कर के ब्यान किया है।

वेद भी यही कहते हैं 'अशब्द'। जब वह Into being आया उसको शब्द कर के ब्यान किया। जो Absolute God था, अशब्द हालत में उसको 'अनाम' भी कहा है। जब वह Into being आया शब्द हालत में तो उसको 'नाम' कहाः

बनामे ओ कि ओ नामे नदारद

कहते हैं हमारा प्रणाम है उसको जिसका कोई नाम नहीं, ये नाम तो ऋषियों, मुनियों, महात्माओं ने रखे हैं हमारे समझाने के लिए, उस 'ज़ाते हक' को दर्शाने के लिए, लोगों को At home कराने के लिए कि कुछ है। हर एक महापुरुष जो आया, उसने अपनी अपनी जगह अनेकों नाम उसके दर्शाए। हमारे दिल में सब नामों के लिए इज़्ज़त है, जिस नाम से भी प्यार से उसको याद करो, वह दर्शन देता है। यही दशम् गुरु साहब ने फरमायाः

नमस्तं अनामं

हमारी नमस्कार है उसको जिसका कोई नाम नहीं, तो वह जो परमात्मा है न वह तो भई किसी ने देखा न सुना। वह तो लय होने का मुकाम है। यह बात भी सही है। जब वह Into being (होने में) आया 'एको बहु श्याम' कि मैं एक से अनेक हो जाऊँः

एको कवाओ तिस ते होए लक्ख दरयाओ।

जब वह Into being आया तो उसका नाम 'नाम' हुआ। उस 'नाम' की तारीफ कई नामों से की गई। किसी ने उसे राम कहा कि वह रम रहा है, किसी ने वाहेगुरु कहा, किसी ने विषम्भर, किसी ने अल्लाह, किसी ने परमात्मा कहा, दशम् गुरु साहब मस्ती में आये तो अनेकों नामों का इज़हार 'जाप साहब' में किया। ऐसे बारह चौदह सौ नाम 'जाप साहब' में आये हैं जो पहले किसी ग्रंथ पोथी में नहीं आये। हमारे दिल में सब नामों के लिए प्यार है जब तक वे इस हकीकत का बोध कराते हैं। इसलिए गुरबाणी में कहा हैः

बलिहार जाऊं जेते तेरे नाओं हैं।

अरे भई, हकीकत के इज़हार के लिए लफ्ज़ बरते हैं। वे सब नाम हम को प्यारे हैं मगर साथ ही साथ यह भी कहा किः

कौन नाम जग जां के सिमरे पावे पद निरबाना॥

वह कौन सा नाम है जिसके सिमरण से हमें निर्वाण पद की प्राप्ति हो सकती है? निर्वाण पद, त्रिगुणातीत अवस्था को कहते हैं। जितने भी नाम हैं वे सब तीनों गुणों में हैं। आर्य समाजी भाई कहते हैं कि हमारा नाम सबसे ऊंचा है जाप के लिए, इससे उधार होगा। भई अक्षरी नाम ठीक हैं मगर अक्षरी नाम जिसका बोध कराते हैं उससे न लगे तो शांति कैसे होगी? पानी है, इसे वाटर कहो, आब कहो, जल कहो, Aqua कहो या वाओ कहो, ये अक्षरी नाम हैं हर एक ज़बान में पानी के। अक्षरी नामों के खाली उच्चारण करने से प्यास नहीं बुझेगी, इससे रुचि होगी, शौक़ बनेगा, उधर तवज्जो लगेगी कि हां कोई चीज़ ऐसी है जिसके पीने से प्यास बुझ सकती है। जब तक जिसका अक्षर बोध करते हैं वह चीज़ Liquid (तरल) है, वह चीज़ हमें न मिले, प्यास नहीं बुझती।

इस्म ख्वानी रौ मुसम्मा राबजो,
बे मुस्समा इस्म के बाशद निको।

तुम नाम ले रहे हो, जाओ नाम को पकड़ो। बगैर नाम के अक्षरी नाम तुम्हें क्या फायदा दे सकते हैं? इनकी भी ज़रूरत है, हर चीज़ की Value (कीमत) है। सिमरण या जप से हमने शुरू होना है, किसी न किसी नाम से, इसका भी कारण है, इसकी ज़रूरत क्या है? हमारे दिल दिमाग़ में दुनिया बस गई है। कैसे? दुनिया का सिमरण कर कर के। अब ऐसी हालत को दिल से निकालना है तो प्रभु के सिमरण से काटो इसे। लोहे को लोहे से काटो। इसलिए सिमरण की ज़रूरत है। जप कहो, सिमरण कहो, यह है Elementary step, पहला कदम है, इसके भी अनेकों फायदे हैं। गुरु अर्जुन साहब ने एक पूरी अष्टपदी इस पर कही है, फारमायाः

सिमरो सिमर सिमर सुख पाओ॥
कल कलेष तन माहिं मिटाओ॥
सिमरो जाप विसंभर एकै॥
नाम जपत अगणत अनेकै॥

फिर सारी महिमा ब्यान करते हुए कि सिमरण में क्या क्या फायदे हैं, आखिर फरमाते हैंः

हर सिमरण में अनहद झंकार॥

अनहद की झंकार बजती है, वहां वह अखंड कीर्तन, वह Sound Principle, Music of the spheres जिसका Plato (अफ्लातून) ने ब्यान किया है। कब उसका Contact (संपर्क) मिलता है? सिमरण की यकसूई (एकाग्रता) करने से, रूह के सिमट जाने से उसका Contact (सम्पर्क) मिलता है।

तेरे द्वारे धुन सहज की माथे मेरे दगाई॥

उस में ध्वनि हैः

राम नाम कीर्तन रत्न वथ हर साधु पास रखीजे॥

रमें नाम में कीर्तन है, Sound principle है, एक ही राग है, उसकी हीरे जवाहारात जैसी कुंजी हरि ने साधु के पास रखी है। जहां जहां गुरबाणी में कीर्तन का ज़िक्र आया है, वहां साथ साथ साधु का भी ज़िक्र आया है।

साध संग हर कीर्तन गाईये

साधु के संग में हरि कीर्तन गाओ। बाहरी कीर्तन Elementary steps (आरंभिक कदम) हैं, इनसे फायदा उठा लो मगर जिस कीर्तन से आत्मा मन से आज़ाद होती है, जन्म जन्म की सोई अवस्था से जाग उठती है वह अखंड कीर्तन है जो घट घट में हो रहा है। इसके मुतल्लिक गुरु साहब ने फरमायाः

अखंड कीर्तन तिन भोजन चूरा॥
कहो नानक जांके सत्‌गुर पूरा॥

और

हर कीरत साध संगत है सिर कर्मण के कर्मा॥

साधु के संग में जो हरि कीर्तन मिलता है, वह सब कर्मों से ऊंचा है। वह कब मिलता है?

जिन पूरब लिखे का लहणा॥

तो इस नाम में ध्वनि है, अखंड कीर्तन है, इलाही राग है। Socrates (सुकरात) ने ज़िक्र किया है, मुझे एक आवाज़ सुनाई दी जो मुझे एक

नई दुनिया में ले गई। उस को वेदों ने श्रुति कहा, नाद कहा, वह अनाद है। नाद हुआ, नाद से चौदह भवन बने। मुसलमान फकीरों ने उसे कलमा कहा, कलमे से चौदह तबक़ बने। अक्षर तो न रहा। ला इल्लाह इल्ललाह ये अक्षर हैं उस ताकत का बोध कराने के लिए जो नहीं है सिवाय अल्लाह के और कुछ। उसकी तारीफ नाम कर के की है।

नाम के धारे खंड ब्रह्मंड॥

नाम वह ताकत है जो खंडों ब्रह्मंडों को धारण किए हुए हैं। उस नाम को ध्याने से जीव का कल्याण है। ''जप जी'' साहब में जहां सारा उपदेश खत्म हुआ है तो गुरु नानक साहब ने फरमायाः

जिन्नी नाम ध्याया गये मशक्कत घाल॥
नानक ते मुख ऊजले केती छुट्टी नाल॥

जिन्होंने नाम को ध्याया है उनकी मनुष्य जीवन की मुशक्कत सफल हो गई। उन के अपने मुख मालिक की दरगाह में उजले हो गये और उनके साथ अनेकों जीवों का उद्धार हो गया। यह नाम की महिमा है। इसे गुरबाणी में बड़े तरीके से ब्यान किया है। फरमाते हैंः

नानक कागद लक्ख मणां पढ़ पढ़ कीजै भाओ॥
मस्सु तोट न आवई लेखे पवण चलाओ॥

लाखों मन कागज़ भक्ति भाव से पढ़ जाओ। सारी दुनिया की धर्म पुस्तकें शायद हज़ार मन से ज्यादा नहीं होंगी। इसी पर बस कर दो? कहते हैं नहीं, कुछ और भी कहते हैं कि सियाही की कमी न हो और हवा की तरह और भक्ति भाव से लिखते चले जाओ।

तो भी कीमत ना पवे हौं केवड आखां नाओं॥

नाम अक्षर नहीं है भई। God into expression power (परमात्मा की प्रकट ताकत) का नाम है जो खंडों, ब्रह्मंडों की बनाने वाली है। उस नाम के ध्याने से जीवों का कल्याण है। अक्षरी नाम उसका बोध कराने के लिए हैं, इन से हम ने चलना है। हमारे दिल में इन सबके लिए इज़्ज़त है।

धर्म पुस्तकों में महापुरुषों के, अनुभवी पुरुषों के जो कलाम हैं उनके

पढ़ने से हमारे दिल में रुचि पैदा होती है मगर वे भी किसी Intellectual (बुद्धि के पहलवान) पुरुष से सुनेंगे तो समझ नहीं आयेगी। अभी सरदार साहब फरमा रहे थे कि अंतर Intellectual light है, अरे भई Intellectual light नहीं, सचमुच लाईट है।

नाम जपत कोट सूर उजेयारा बिनसे भरम अंधेरा॥

गुरु अमरदास जी से पूछा गया कि गुरु क्या देता है, फरमाते हैं:

गुरु ज्ञान अंजन सच नेत्री पाया॥
अंतर चानण, अज्ञान अंधेर गंवाया॥

अंतर प्रकाश हो जाता है जो उस नूर को देखने वाला है अंतर में। दशम् गुरु साहब ने कहा वही खालसा है:

पूर्ण जोत जगे घट में ताहें खालस ताहें नखालस जानो॥

जो पूर्ण ज्योति का देखने वाला है घट में, जिस के हृदय में प्रकाश हो गया वह खालसा है। ऐसा एक खालसा लाओ हम उसके पांव धोने को तैयार हैं। ऐसे पांच सात मिल जायें तो क्या कहने हैं? मुसलमान की भी यही तारीफ की है—जो कोहेतूर पर चढ़कर खुदा का नूर देखता है उसका नाम मुसलमान है। यह कोहेतूर है (माथे पर)। हिन्दू भी उसी का नाम है जो परमात्मा की ज्योति को देखता है। क्रिसचन (ईसाई) भी उसी को कहते हैं जो Light of God (प्रभु की लाईट) को देखता है। भई सब महात्मा यही कहते हैं। तो वह God into expression power (अव्यक्त) जिसको नाम कहा, इज़हार में आया वहां Vibration (हिलोर) हुई तो दो चीज़ें पैदा हुईं, एक Light यानी ज्योति, दूसरी Sound यानी आवाज़, एक ज्योति मार्ग एक श्रुति मार्ग, ये दो ही मार्ग हैं। ये सब के घट में हैं। हमारी हालत क्या है? परमात्मा ने आत्मा देहधारी (इंसान) बनाये। आत्मा की ज़ात वही है जो परमात्मा की ज़ात है। वह चेतन प्रभु, हमारी आत्मा उसकी ज़ात का कतरा है, A drop of the ocean of life है। यह जिस्म जिस्मानियत के घाट में बंधी पड़ी है, मन-इन्द्रियों का रूप हो रही है। जगत का रूप हो रही है, अपने आपको भूल गई है। अब वह परमात्मा की ज्योति घट घट में है, महापुरुषों ने देखी। गुरु नानक साहब से पूछा गया, परमात्मा है क्या? फरमाया:

नानक का पातशाह दिस्से जाहिरा॥

वहां कोई दलील नहीं, No reasoning. क्राईस्ट से पूछा गया, उन्होंने भी यही कहा, Behold the Lord — No reasoning. हम तुम से कोई पूछता है तो हम कहते हैं कि मौसम वक्त पर आता है, घड़ी है, उसके बनाने वाला भी कोई है। दुनिया के Great mechanism (महान सिलसिले) का बनाने वाला भी कोई होना चाहिए। As a matter of inference (नतीजे के तौर पर) या क्या कहते हैं भई Feel करो, महसूस करो कि परमात्मा सबमें है। कोई उसका ज्योति बना कर ध्यान करता है, कोई तसवीर रखकर ध्यान करता है, कोई अक्षर बनाकर करता है। भई That is your own way, यह आप की अपनी बनावट है। वह लाईट है कहां? आपके घट में। आप कहां बस रहे हैं? आप इंद्रियों के घाट का रूप बने बैठे हो। जब तक इंद्रियों के घाट से ऊपर नहीं आते उसका ताल्लुक (संपर्क) नहीं मिलता। नाम की तारीफ भी यही की गई है।

अदृष्ट अगोचर नाम अपारा॥
अत रस मीठा नाम प्यारा॥

वह बाहरी दृष्टि का मज़मून नहीं, वह अंतर्मुख होने से मिलता है, इंद्रियों के घाट से ऊपर आकर उसका ताल्लुक मिलता है। बड़ा मीठा, बड़ा प्यारा, बड़ा नशा देने वाला है वह नाम।

नाम खुमारी नानका चढ़ी रहे दिन रात॥

मैं ज़्यादा Detail (विस्तार) में नहीं जाऊंगा, थोड़े लफ्ज़ों में, सबके घट में उस की ज्योति है। उसमें Sound principle (आवाज़) भी है और ज्योति भी है। हम उस की ज्योति को देख सकते हैं और उसकी प्रणव की ध्वनि को सुन सकते हैं। गुरु अमरदास जी ने कहाः

ऐ नेत्रो मेरेयो हर तुम में जोत धरी
हर बिन अवर न देखो कोई॥
ऐ श्रवणो मेरेयो हर शरीर लाए सुणो सत्त बाणी॥

ऐसी बाणी जो हमेशा सत है, बाहरी बाणियां कोई पांच सौ साल से है, कोई डेढ़ हज़ार साल से, कोई पांच हज़ार साल से है। यह बाणी

सत बाणी जो हैः

बाणी वज्जी चौह जुगी सच्चो सच सुणाए॥

वह हमेशा से चली आई है। वह बाणी है। वह अनादि है, वह अनाम है, वह शब्द है। वह Into being (हस्ती में) जो आया वह बाणी हुआ, नाद हुआ, शब्द हुआ। उसमें दो चीज़ों का Expression, उसके दो Phases (पहलू) बनते हैं, एक Light (रोशनी), एक Sound (आवाज़)। तो दो ही मार्ग हैं, एक ज्योति मार्ग एक श्रुति मार्ग। मुसलमान फकीरों ने उसे कलामे कदीम भी कहा हैः

हैफ दरबंदे जिस्म दर मानी।
नशनवी सौते-पाक रहमानी॥

अफसोस हम जिस्म जिस्मानियत की कैद में फंसे हैं। उस कलामे कदीम को जो आ रहा है, हम नहीं सुनते। उन्होंने भी कलमे की यह तारीफ फरमाईः

ऐ खुदा बिनमा रा आं मुक़ाम।
कंदरो बे हर्फ मी रवेद कलाम॥

ऐ खुदा, हमें वह मुकाम बताओ जहां बगैर हर्फों के कलमा उग रहा है।

जहं बोल तहं अक्सर आवा॥
जहं अबोल तहं मन नहीं धावा॥
बोल अबोल मध्य है सौई॥
जैसा है तस लखे न कोई॥

बड़ी Frank opinion (लाधड़क विचार) दी है। तो इस नाम के साथ कौन लग सकता है? कौन देख सकता है? कौन सी आंख है जिससे वह नज़र आता है? गुरु नानक साहब से पूछा गया, फरमायाः

नानक से अक्खड़ियां बेअन्न जिन दिसंदो मापरी॥

वे आंखें और हैं जिनसे वह नज़र आता है। ये तो चमड़े की आंखें हैं। यही भगवान कृष्ण ने गुरु की हैसियत में अर्जुन को बताया, ''तुम मुझ को इन चमड़े की आंखों से नहीं देख सकते बल्कि उस दिव्य चक्षु से जो मैंने तुमको दिया है।''

वह है तो सही। क्राईस्ट ने भी यही कहा है। St. Mathews कहते हैं, If thine eyes be single thy whole being shall be full of light, अगर तुम्हारी दो से एक आंख बन जाये तुम्हारा अंतर नूर से भर जाये। अरे भई, सारे महापुरुष यही बात कहते हैं। उसमें नूर है, उसमें कलामे कदीम है मगर हम इस वक्त क्या बने पड़े हैं। वह किस के अंतर है, किसके अंतर नहीं? वह सबके अंतर है। हम उसको क्यों नहीं पा सकते? इसलिए कि हम मन-इंद्रियों का, जगत का रूप बने बैठे हैं और अपने आप को भूल गये हैं। आप अंत समय देखते हैं क्या होता है? आत्मा जिस्म से जुदा होती है। नीचे चक्र टूटते हैं, आंखें पलट जाती हैं, बस। आखरी रूह का मुकाम तो यही है। एक दिन जिस्म को छोड़ना है। इंद्रियों के घाट से ऊपर आकर ही नाम का Contact (संपर्क) मिल सकता है, उसकी ज्योति प्रकट हो सकती है, और तो कोई तरीका नहीं, सब महापुरुष यही कहते हैं। तो इसलिए यह बतलाया कि किसी ऐसी हस्ती से मिलोः

तू देख उलट कर मन में

स्वामी जी महाराज फरमाते हैं, अंतर उलटो। संतों के मार्ग को उलटा मार्ग भी कहते हैं। गुरु अमरदास जी महाराज ने फरमायाः

सत्गुरु मिलिए उलटी भई भाई
जीवत मरे तां बूझ पाये॥

जब सत् स्वरूप हस्ती मिलती है तो हमारी इंद्रियां उलटने लगती हैं। जीते जी मरना, जब रूह सिमट कर आंखों के पीछे आ गई तो यह मरना हो गया कि नहीं, यह Practical (अनुभव का) मज़मून है। तां बूझ पाये, तो वह हकीकत को समझने वाला बनता है। जब तक हम जिस्म-जिस्मानियत का रूप बने बैठे हैं, इंद्रियों के घाट पर बैठे हैं, बाहरी खाहिशात (इच्छाओं) में ज़लीलो-ख्वार हो रहे हैं हम हकीकत से दूर रहते हैं। यह हकीकत हममें है। गुरु अमरदास जी 70 साल तक तलाश करते रहे, जब गुरु अंगद साहब के चरणों में आये, हकीकत को पाया, बड़े प्यार से समझाया हैः

मनुवा दह दिस धांवदा ओह कैसे हर गुण गावै॥
इंद्री व्याप रही अधिकाई काम क्रोध नित्त सतावै॥

मन को इंद्रियां व्याप रही हैं, यह कभी क्रोध में खेलता है, काम में गिरता है। जो मन इंद्रियों के वश में है उसको प्रभु क्या है:

दस इंद्रे कर राखे बास॥
तां के आत्मे होए प्रकास॥

जो पांच कर्म इंद्रियों और पांच ज्ञान इंद्रियों को वश में करे, उन्हें Invert (अंतर्मुख) करे उसके अंतर नूर भर जायेगा। तो वह Light (रोशनी) जो है Already ~~exist~~ (पहले ही) exist करती है आपके अंदर मगर जब तक आप इंद्रियों के घाट से ऊपर नहीं आते, उसको देख नहीं सकते। अब भी है वह ज्योति। गुरु अमरदास जी को जब यह हकीकत मिली तो फरमाते हैं:

हम नीच ते उत्तम भए भाई हर की सरणाई॥
डुब्बदा पाथर काढ लिया साची वडियाई॥

भाई, हम कभी आपकी तरह इंद्रियों के घाट पर थे। अब उत्तम पदवी को पा गये जब से हरि की शरण आये। फिर कहा है:

बिख से अमृत भये जब ते गुरमत बुध पाई॥

गुरु की मत मिली, पहले हम माया में ज़हरआलूद (लिबड़े) थे, अब उत्तम पदवी को पा चुके हैं। यह बात ब्यान करने की गर्ज़ क्या है? There is hope for every body, हर एक इंसान के लिए उम्मीद है। आज एम.ए. पास है जो कभी पहली में पढ़ते थे, जो आज पहली जमात में पढ़ते हैं वे भी एम.ए. पास हो सकते हैं बशर्ते कि मुनासिब हिदायत और मदद मिले। महापुरुष यह कभी नहीं कहते कि हम आसमानों से उतरे हैं। वे कहते हैं हम तुम्हारी तरह इंसान हैं:

माणस मूरत नानक नाओं।

कि मैं तुम्हारे जैसा इंसान हूं, नानक मेरा नाम है। हां वे Mouthpiece of God (प्रभु का मुख) बने, उन्होंने अपनी आत्मा को मन-इंद्रियों से आज़ाद करके अपने आप को जाना और प्रभु को पाया।

जैसे में आवे खसम की बाणी
तैसड़ा करी ज्ञान वे लालो॥

जो आज एक इंसान कर रहा है, वह (दूसरा) भी बाकायदगी से चले तो वह भी इस हकीकत को पा सकता है। There is way back (वापसी का रास्ता है) बाकायदगी से मगर किन की सोहबत से यह मिलेगा? पहला कदम, हमारे हज़ूर (बाबा सावन सिंह जी महाराज) एक मिसाल दिया करते थे कि एक मिठाइयां बनाने की किताब है, उसमें लिखा है कि लड्डू ऐसे बनता है, जलेबी ऐसे बनती है, कलाकंद ऐसे बनता है। साथ ही यह भी लिखा है कि डाक्टरी लिहाज से खांड की यह तासीर है, घी की यह तासीर है, बड़ी अच्छी तरह दिया है ब्यान। अब सारा दिन सुबह से शाम तक इस किताब को पढ़ते रहो, तुम्हारा पेट भर जाएगा? स्वाद आयेगा? Reasoning is the help and reasoning the bar. हम इस वक्त विचार से काम कर रहे हैं एक नतीजे पर पहुंचने के लिए लेकिन अनुभव तब चलेगा जब इंद्रियां दमन हों, मन खड़ा हो और बुद्धि भी स्थर हो तब आत्मा का साक्षात्कार होगा। बड़ा Practical (प्रैक्टिकल) मज़मून है। जब तक हम इंद्रियों के घाट से ऊपर नहीं आते, जिसे जीते जी मरना कहते हैं, तब तक हकीकत नहीं खुलतीः

नानक जीवंदेया मर रहिए ऐसा जोग कमाइए॥

कबीर साहब फरमाते हैंः

मरिये तो मर जाइये फूट पड़े संसार।
ऐसी मरनी जो मरे दिन में सौ सौ बार॥

जब चाहो, तुम जिस्म से ऊपर आ जाओ। भाई मनी सिंह बंद बंद कटा रहा है। गुरु अर्जुन साहब तत्ते (गर्म) तवे पर बैठे और बाहोश (होश में) बैठे। यह सुरत का मार्ग है, वे सुरत के पहलवान थे। भाई मनी सिंह ने सुरत को यहां (माथे की तरफ ईशारा कर के) रखा, काट लो भई। यह एक Regular Science (पक्की साईंस) है भई। आज हम इसे भूल चुके हैं। सब महापुरुषों ने इस पर ज़ोर दिया है। श्री गुरु अमरदास फरमाते हैंः

मरने ते सब जग डरे जीवेयां लोड़े सब कोए॥
गुरप्रसादी जीवत मरे तां हुकमे बूझे कोए॥

मरने से सब डरते हैं, आलिम हो या फाज़िल, अमीर हो या गरीब, हर कोई यह चाहता है कि मैं दो घंटे और जी लूं। अगर किसी अनुभवी पुरुष की कृपा से जीते जी मरने के राज़ को जान जाये, How to rise above the body consciousness, यह समझ ले तो हमेशा की ज़िंदगी को पा जायेगा। Learn to die so that you may begin to live, यह Practical (अनुभव का) मज़मून है। जीते जी मरने के राज़ को समझ ले तो क्या होगा? कहते हैं, तां हुक्मे बूझे कोए। तो वह Conscious co-worker of the Divine plan (प्रभु की प्लान का सहकार्यकर्ता) हो जायेगा।

नानक हुक्मे जे बुझे तां हौमे कहे ना कोए॥

वह कहता है, वह (प्रभु) करने वाला है, मैं नहीं हूं। फिर क्या कहते हैं:

ऐसी मरनी जो मरे तां सद जीवन होए॥

कि ऐसी मरनी जो मरे तो हमेशा के जीवन को पा जायेगा। सब महात्मा यही कहते हैं। यही और महात्माओं ने कहा है। मुझे शौक़ था मुखतलिफ (विभिन्न) समाजों की किताबें पढ़ने का। बड़े शौक़ से जाता किताबें लेने, तफसीरें (अनुवाद) इसलिए नहीं लीं कि हर एक Commentator (टीकाकार) अपनी राय देता है और किताब की Original beauty (आधारभूत सुंदरता) को Lose (खो) कर देते हैं। Intellectual wrestling (बुद्धि की पहलवानी) से हर एक अपना रंग देता है तो हकीकत गुम हो जाती है। तो फारसी के लिए मैंने मुन्शी फाज़िल की तैयारी की समझने के लिए मुसलमान फकीरों का कलाम। इसी तरह और महापुरुषों की बाणियां पढ़ीं। महापुरुषों की बाणियां अगर आप किसी अनुभवी पुरुष से सुनो वही कुछ और रंग देंगी क्योंकि यह आमिल पुरुषों की बाणियां हैं। तो मैं अर्ज़ कर रहा था कि यह जीते जी मरने का राज़ है, यह एक Practical (अनुभव का) मज़मून है। अपराविद्या और पराविद्या ये दो विद्याएं हैं। अपराविद्या में पढ़ना लिखना, विचारना, तीर्थ, व्रत, नियम, दान ये सब शामिल हैं। ये ज़मीन की तैयारी है, इनसे मुक्ति नहीं है। मुक्ति पराविद्या से, आत्म तत्व के बोध से होगी,

To know who you are, what you are (यह पाकर कि आप कौन हैं क्या हैं)। उस प्रभु को पाना मनुष्य जीवन का सबसे बड़ा आदर्श है। किसी भी समाज में रहो, परमात्मा ने तो आत्मा देहधारी बनाये हैं, समाज तो हम लोगों ने बनाए हैं। इंसान Social being (सामाजिक प्राणी) है इसलिए किसी न किसी समाज में रहता है। किसी भी समाज में रहो, उसमें रहते हुए उस आदर्श को पाओ जो सब समाजों के सामने है। हर एक समाज के सामने क्या आदर्श है? कि हकीकत को पाओ, प्रभु को पाओ, नेक पाक सदाचारी जीवन बनाओ, परमात्मा से प्रेम करो, परमात्मा घट घट वासी है, इसलिए सबसे प्रेम करो। जिससे प्रेम करोगे उसको दुख क्यों दोगे? उसका तो दुख दर्द बांटोगे, यह तो बाहरी पहलू रहा। किसी अनुभवी पुरुष के पास जाओगे तो उसकी पहली निशानी यही है:

सत्गुर ऐसा जाणिए जो सबसे लए मिलाए जीओ॥

वह सबको मिलाकर बैठता है, वह समाजों का गुरु नहीं, वह जगत गुरु होता है। उसने हकीकत को पाया है और दूसरों को दे रहा है। आप भी दे सकते हो, ऐसी बात नहीं कि कोई Reserved right (पक्का अधिकार) उनका हो गया। जो भी इस अनुभव को पायेगा अगर वह Competent (समर्थ) है वह भी दे। तो मेरे कहने का मतलब यही है कि हकीकत सबमें है और सब महापुरुषों ने इसका ज़िक्र किया है। आज आपने मुखतलिफ (विभिन्न) महात्माओं की मज़हबों के लिहाज़ से बातें सुनीं। जैन मत यह कहता है कि हमारी आत्मा उस प्रभु की अंश है, It is a drop of the Ocean of life, बात तो वही है। हम चेतन सुरत हैं मगर Defiled by mind and matter, ख्वाहिशत से Defile (मैली) हो चुकी है हमारी आत्मा। अगर हम उसको पाना चाहते हैं तो क्या करें, ख्वाहिश को कम करो, फैलाव से हटो। यही महात्मा बुद्ध कहता है, Be desireless. यही गुरु नानक साहब कहते हैं:

एह तन पाया पाहेया प्यारे लीतड़ा लब रंगाये॥
मेरे कंत न भावे चोलड़ा प्यारे क्यों धन सेजे जाये॥

आत्मा और परमात्मा कभी जुदा नहीं हुए:

एका संगत इकत ग्रह बसते मिल बात न करते भाई॥

अफसोस है कि जिस परमात्मा की हम तलाश कर रहे हैं वह हमारे घट घट में है। दोनों, आत्मा और परमात्मा इस जिस्म में बस रहे हैं। एक दूसरे को देखना नसीब नहीं, अफसोस नहीं तो और क्या होगा?

एका सेज सुत्ती धन कंता॥
धन सुत्ती पिर सद जागंता॥

एक ही सेज पर आत्मा और परमात्मा दोनों विराजमान हैं। हमारी आत्मा मन इंद्रियों के घाट पर बाहर फैलाव में जा रही है। वह प्रभु इसका इंतज़ार कर रहा है। अगर यह बाहर से हटे तो वह इसके साथ ही है, वह (प्रभु) इससे कभी जुदा नहीं, यह (आत्मा) उससे कभी जुदा नहीं।

तो सब महापुरुषों की तालीम का यही Digest (निचोड़) है कि हकीकत तुम में है, अगर तुम बाहर से हटोगे तो अंतर हकीकत तुममें है। अगर तुम बाहर से हटोगे तो अंतर हकीकत को पाओगे। दूसरे बुद्ध मत के बारे में, इसमें दो शाखाएं हैं, आज जो भाई आये थे (रेवरंड आर्यवंशी), वह शायद महायान बुद्धिज़म नाम से ताल्लुक नहीं रखते। महायान बुद्धिज़म जो है वह तो ईश्वर का इकरार करते हैं। एक दफा एक अमेरिकन से बातचीत के दौरान में इस मंत्र का ज़िक्र आयाः

ओम मणि पदमे हू।

यह महायान बुद्ध का मंत्र है जिसके मायने यह हैं कि ओम (प्रभु) मणि की तरह प्रकाशमान है, उसमें Light (प्रकाश) और बादल की गरज है, Sound Principle (ध्वनि) है। मुझे दीवाली पर दो लामा मिले थे, उन्होंने उपदेश लिया और तिब्बत को वापस चले गए, गोविंदानन उसका नाम था। उन्होंने वहां से चिट्ठी लिखी की आपने जो तालीम दी है वह हमारे बुद्ध मत में मौजूद है, I have found out (मैंने ढूंढ निकाला है)। तो हकीकत यही है, आप कैसे कह सकते हैं कि आप कुछ नहीं।

एक दफा की बात है, एक बोध साहब आये हज़ूर के पास ब्यास में। हज़ूर ने फरमाया कि एक बोध महात्मा आया हुआ है, लेक्चर दे रहा है, तुम भी जाओ। मैं गया, वह लेक्चर दे रहा था, There is no soul, there is no God. मैं बैठा सुन रहा था। मैंने थोड़ा Pinch किया उसे (चुटकी ली)। वह बोला, What is it? यह क्या है? मैंने कहा, Do you feel? (कि तुम्हें महसूस हुआ?), कहने लगा, हां। मैंने पूछा, What

is it that feels? वह क्या चीज़ है जो महसूस करती है? भई यह Matter (जड़) नहीं है, यह Consciousness (चेतनता) है। अमेरिका में मैं गया। Scientist (साईंसदान) मेरे पास आये। बड़ी लम्बी चौड़ी तकरीर की उसने कि Neutrons, Electrons (न्यूट्रोन, इलैक्ट्रोन) हैं, उनकी बाकायदा Movement (हरकत) होती है। मैंने कहा वह Rythmic है या Haphazard (कि जो परमाणुओं में हरकत होती है वह किसी कायदे में होती है या बेकायदगी में)। वह कहने लगा कि यह Movement (हरकत) है तो Rhythemic (कायदे में) है। मैंने कहा फिर कोई चीज़ है जो इस को कंट्रोल कर रही है? कहने लगा, "मालूम तो ऐसा ही होता है।" मैंने कहा, भई देखो What you have found out so far that is only s research in the domain of matter. Religion is a reasearch in the domain of consciousness. कि तुमने जितनी छानबीन की है यह सब जड़ पदार्थों के बारे में की है, परमार्थ की सारी छानबीन चेतन तत्व के, रूह के बारे में है।

यह सुनकर उसे होश आ गया। चार घंटे Discussion (बहस) रही उससे। सब भाइयों का ख्याल था कि वह अब नहीं आयेगा। दूसरे दिन वह पहला आदमी था जो आया और उसने उपदेश लिया, And he got it और उसको तजरबा हुआ।

तो मेरा अर्ज़ करने का मतलब यह है कि हकीकत तुम में है, तुम चेतन स्वरूप हो। अगर Self-analysis सीख जाओ, यह जान लो कि How to rise above body consciouness, जिस्म से ऊपर कैसे आ सकते हैं तो तुम खुद जान लोगे कि You are not body, तुम जिस्म नहीं हो। अब तो Intellectually (बुद्धि के आधार पर) कहते हो कि मैं जिस्म नहीं, मैं मन नहीं, मैं बुद्धि नहीं, मैं प्राण नहीं। उस वक्त तो आप देखेंगे, Then you will see. हम लोग जो आज प्रभु का विचार कर रहे हैं या देख रहे हैं, ज्यादातर Feeling (भावनाओं) में हैं। परमात्मा सब जगह परिपूर्ण है। यह Feel (महसूस) करो और Intellectual wrestling (बुद्धि विचार से) किसी Inference (नतीजे) पर पहुँचते हैं और नतीजे अखज़ (निकालते) करते हैं तो They are all subject to error. Seeing is above all. इन सब चीज़ों में गलती का इमकान

(संभावना) है। अपनी आंखों की शहादत (गवाही) सबसे अच्छी है।

महात्मा बुद्ध ने जो ब्यान किया है कि जब तक तुम खुद न देखो, न ग्रंथों पर एतबार करो, न Scriptures पर, न किसी और पर। भई ठीक है, Don't believe. अगर न Believe (विश्वास) करोगे तो Conviction (यकीन) कब आयेगी? जब अपनी आंखों से देखो, संतों की तालीम बड़ी आज़ाद है। वे क्या कहते हैं?

जब लग न देखूं अपनी नैनी॥
तब लग ना पतीजूं गुर की बैनी॥

जब तक इंसान अपनी आंखों से न देख ले उसको यकीन नहीं आता। धर्म पुस्तकें पढ़ता है, लेक्चर सुनता है, महात्माओं के मुंह से सुनता है कि अंतर परमात्मा की ज्योति है, फिर कहते हैं कहां है? कैसे हो सकता है यह? जब देख लेता है तो कहता है ठीक है। तालीम हर एक महापुरुष की रही है। महात्मा बुद्ध के पास दो भई गये, एक थे आस्तिक, एक थे नास्तिक। नास्तिक ने कहा कि परमात्मा है? आस्तिक ने कहा कि हां है, वह God है, नेक है, वह दया है, वह Chastity (पवित्रता) है। उसने कहा कि वह जो कुछ है उस पर अमल करो, खुद बखुद हकीकत को पा जाओगे, Ethical Life (पवित्रता) बनेगी। महात्मा बुद्ध इस मसले पर खामोश रहे, He was silent on the subject मगर महायान मंत्र बताता है कि वे परमात्मा को मानते थे। He was a believer in God, ओम मणि पदमे हू। हां, तो उसके बाद नास्तिक से कहने लगे, ''सच बोलना अच्छा है कि नहीं? रहम (दया) करना अच्छा है कि नहीं? किसी को दुख न देना अच्छा है कि नहीं?'' वह बोला, ''हां है।'' महात्मा बुद्ध कहने लगे, ''तुम यह करोगे तो हृदय साफ होगा और आगे मामला चलेगा।'' तो मेरे कहने का मतलब यह है कि जैसा वक्त और समय होता है वैसा ही उपदेश होता है।

इसके बाद मुसलमान भाइयों का जो उपदेश आता है कि आत्मा में वे सब ताकतें हैं जो परमात्मा में हैं मगर छोटे पैमाने पर, Miniature scale पर हैं। अगर यह मन-इन्द्रियों के घाट से ऊपर आ जाये, उन से आज़ाद हो जाये तो उसी में वह (परमात्मा) बोलता है। There is

a possibility, यह इमकान (संभावना) मौजूद है। जो चीज़ Innate (ज़ातियत में शामिल) न हो वह मिल कैसे सकती है? तो मुसलमान फकीरों की किताबें भी बहुत हैं। हज़रत मोहम्मद साहब भी हुए, मौलाना रूम साहब भी हुए, शम्स तबरेज़ साहब, ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती साहब वगैरा हुए। उन की बाणियां पढ़ो, वही तालीम है जो संतों की है। पराविद्या सबकी एक है, Realisation (असलियत) में जाकर Details (विस्तार) में कुछ न कुछ इख्तलाफ (फर्क) होता है, कुछ रस्म रिवाज़ के सबब (कारण) से या आबो हवा के लिहाज़ से मगर मक्सद एक है, Purpose is same. सिख गुरुद्वारों में जाओ, वहां नंगे सिर जाना पाप है। ईसाईयों के गिरजों में जाओ तो वहां सिर ढांप के बैठना पाप है। दोनों यह चाहते हैं कि जब भी प्रभु की याद में बैठो बा अदब (आदर सहित) हो कर बैठो। अरे भई उनकी रस्म रिवाज़ अलहदा-अलहदा हैं। इसलिए फर्क़ है, बात तो वही है। तो महापुरुष Objective side को, रस्मो रिवाज़ को नहीं छेड़ते। वे कहते हैं, आगे ही बहुत समाज बने पड़े हैं। हमारे हज़ूर फरमाया करते थे कि बहुत सारे कुंएं लगे हैं, और कुआं लगाने की क्या ज़रूरत है? इसी से पानी निकालो। तब तो बात है कि उनमें Truth (सच्चाई) न हो। कबीर साहब ने फरमायाः

वेद कतेब कहो मत झूठे झूठा सो जो न विचारे॥

किसी आमिल पुरुष के चरणों में बैठो, Self analysis (आत्मानुभव) का मज़मून है। Divinity is in you. You are divine in nature, हकीकत तुममें है मगर तुम मन-इंद्रियों के घाट पर ज़लीलो ख्वार हो रहे हो। किसी अनुभवी पुरुष के चरणों में बैठोगे तो वह पहले ही दिन, First day आपको बतायेगा How to rise above body consciousness, कि जिस्म से ऊपर कैसे आ सकते हैं?

इसके बाद और महात्माओं ने बताया। श्री अरबिंदो घोष के मुतल्लिक जो बताया वह ज़्यादातर उनकी ज़िंदगी के बारे में ब्यान किया। हमें खुशी है कि जो तालीम उन्होंने दी, एक दफा अखबार में ज़िक्र आया था उसका, मैंने पढ़ा था। श्री अरबिंदो घोष ने ब्यान किया कि मैं अब एक

ऐसी मंज़िल पर जा रहा हूँ जिसके मुतल्लिक वेदों को भी खबर नहीं है। यह इशारा दिया उन्होंने। तो मेरे अर्ज़ करने का मतलब यह है कि Degrees (डिग्रियां) हैं, Development (तरक्की) की जितनी जितनी जिसकी रसाई हुई।

जब से दुनिया बनी है महापुरुष आते रहे। जिस हकीकत को उन्होंने पाया उसे खोल खोल कर समझाया और Practical Experience (अनुभव) दिया उन लोगों को जो उनसे मिले और उनके Fine records (रिकार्ड) धर्म पुस्तकों की शकल में हमारे पास मौजूद हैं। We have respect for them all, हमारे दिलों में महापुरुषों के लिए इज़्ज़त है क्योंकि वे नूर के बच्चे हैं, They are all children of light.

मैं अमेरिका गया तो वहां लोग कहने लगे, Christ is the greatest of them all, क्राईस्ट (मसीह) सबसे बड़ा है। मैंने कहा कि तुम्हारे पास क्या सबूत है इस बात का? What is the proof with you? कहने लगे कि उसने कहा था कि मैं खुदा का बेटा हूं, I am the son of God. मैंने कहा, ठीक है मगर यही वचन कोई और महापुरुष कह दे तो? मैंने उन्हें Quotations (हवाले) दिए गुरु अर्जुन साहब के, दशम गुरु साहब के, और महात्माओं के। गुरु अर्जुन साहब ने कहाः

पिता पूत एके रंग लीने॥

पिता पूत रल कीनी सांझ॥

और दशम् गुरु साहब की बाणी हैः

मैं सुत तोहे निवाजा

कि जा भई मैं तुझे पुत्र थापता हूं। ये हवाले देकर मैंने उनसे पूछा, How would you take it now? मैंने उनसे कहा कि बात यह है, You are not aware of the scriptures of others, कि आप लोग दूसरों की धर्म पुस्तकों से वाकिफ नहीं हैं और Moreover (यह कि क्राईस्ट (मसीह) की तालीम भी Practical (अनुभव की) ही थी, To rise above the body consciousness (शरीर के ऊपर आना)। उन्होंने (मसीह ने) कहा Learn to die so that you may begin to live. मरना सीखो ताकि हमेशा का जीवन पा जाओ। फिर एक और जगह कहा मसीह ने, Whosoever shall lose this life shall save

it and whosoever shall save this life shall lose it, कि जिस्म जिस्मानियत की ज़िंदगी को जब छोड़ दोगे तभी आप हमेशा की ज़िंदगी को पा सकते हैं। अगर इसी ज़िंदगी से (जिस्म जिस्मानियत की ज़िंदगी से) जकड़े रहोगे तो तुम हमेशा की ज़िंदगी को नहीं पा सकते।

सो तालीम सब महात्माओं की वही है, ज़बांदानी (भाषा) अपनी अपनी है। फिर मैंने उनको एक Talk (प्रवचन) देते हुए कहा कि तुम क्राईस्ट की तालीम को उस वक्त तक नहीं समझ सकोगे जब तक Eastern eye (पूर्वीय नज़र) के ज़रिए न देखो। कहने लगे, Why? (यह क्यों)? मैंने कहा, Because Christ was an eastern (क्योंकि यशु एक पूर्वीय था)। वे Dumb founded, भौचक्का रह गये, जवाब कोई नहीं। वाकई था वह Eastern (पूर्वी) और Parallel throughts (समानांतर विचार) मिलते हैं। उसने (मसीह ने) भी कहा, "If thine eyes be single thy whole being shall be full of light (अगर तुम्हारी दो से एक आंख हो जाए तो आप में प्रभु का प्रकाश भर जाएगा) और फिर कहा, Except ye be born anew ye cannot enter the kingdom of God. (जब तक तुम दो जन्मे नहीं बनते तब तक प्रभु के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकते ।) इंग्लैंड में Talk (प्रवचन) हुई। मैंने उनको कहा, You cannot pray God with hands (आप बाहरी हाथों से प्रभु की प्रार्थना नहीं कर सकते।) God does not reside in the temples made by the hands of men. (प्रभु इन्सानी हाथों से बने मंदिरों में नहीं रहता)। एक बिशप थे, उठे, कहने लगे, With one word of yours you have thrown atom bomb on all our churches (आपने एक शब्द कह कर हमारे गिरजों पर बम फेंक दिया है।) उसको Initiation (नाम) मिला। सो मेरे अर्ज़ करने का मतलब यह है कि Truth is one (सच्चाई एक है)। अनुभवी पुरुषों ने जितना जितना Realise (अनुभव) किया वे Hand down (पेश) करते गये धर्म पुस्तकों की शकल में। अब भी यह Practical (अनुभव का) मज़मून है। जब तक अनुभवी पुरुष न मिले इसका अनुभव नहीं मिलता। अपने आप कोई कर सकता है तो बेशक करे। मुझे शिमला में एक भाई मिले। कहने लगे, ''आप हमें साधन बताओ, हम अपने आप कर लेंगे।'' मैंने

कहा, बहुत अच्छा भई।' मैंने तुलसी साहब की बाणी दे दी। उसमें लिखा था:

पुतली में तिल तिल में भरा राज़े कुल का कुल,
इस पर्दाए-स्याह के ज़रा पार देखना।

आंखों के पीछे जो सियाही (अंधेरा) है उसमें Penetrate (ध्यान टिकाओ) करो, उसके पार जाओ। कहने लगे, "अगर हम अपने आप कर लें तो?" मैंने कहा, "फिर और क्या चाहिए? अंधे को दो आंखें चाहिएं। करो, न कर सको तो जाओ किसी आमिल के पास। सवाल यह है, How to rise above body consciousness, जिस्म से ऊपर कैसे आयें?" बात यह है। जो आगे ही इंद्रियों के घाट का रूप बना बैठा है, और साधन वह करता है जिनका ताल्लुक इंद्रियों के घाट से है, फिर इंद्रियों के घाट से कैसे ऊपर जा सकते हैं? Common sense (साधारण) बुद्धि) की बात है। अगर कोई भाई जा सकता है तो Let him try and see, let him sit at the feet of somebody (उसे करके देखने दो, उसे किसी महापुरुष के चरणों में बैठने दो)। गुरु नानक साहब ने फरमाया:

सुण मन भूले बावरे गुर की चरणी लाग॥

बड़े साफ लफ्ज़ थे और यह कहा कि महाराज नाम की आपने बड़ी महिमा की है, नाम कहां मिलता है? फरमाया:

जहां नाम मिले तहां जाओ॥

नाम तुम्हारे अंतर है। इसमें ज्योति है और प्रणव की ध्वनि हो रही है। जहां से वह नाम मिलता है ले लो। फिर कहा:

गुर प्रसादी कर्म कमाओ॥

किसी अनुभवी पुरुष की कृपा से यह कर्म कमा सकते हो। तो एक ऐसी Truth, हकीकत है जो सब महापुरुषों ने पेश की है। मुखतलिफ महापुरुषों की बाणियां पढ़ने का मुझे शुरू से शौक़ रहा। पहले बात समझ नहीं आता थी, जब हज़ूर के चरणों में आये बात समझ में आई। अरे भई यह Possibility (संभावना) कि जिस्म से ऊपर आ सकते हैं, जीते जी जिस्म से ऊपर कौसे जा सकते हैं? मर तो नहीं जायेंगे? अरे भई

मरना भी नहीं, ऊपर भी आना है, अंतर की आंख भी खुलती है, उसके ज्योति मार्ग में भी चलता है, श्रुति मार्ग से चल कर कहां पहुँचता है? That is the way back to God. (वह प्रभु के घर वापस जाने का रास्ता है), जहां से वह आ रही है, Absolute God में, अनाम और अशब्द में वह पहुंच जाता है। यह संतों की तालीम है, हर एक महापुरुष ने यह तालीम दी। जब तक कोई आमिल (अनुभवी) पुरुष न मिले यह तालीम एक सरबस्ता राज़ (छुपी) है और राज़ रहेगी। कबीर साहब, Father of Spirituality (रूहानियत के पिता) समझे जाते थे। गुरु नानक साहब और कबीर का आपस में मेल–जोल हमारी तारीख (इतिहास) बताती है। गुरु नानक साहब के बाद दस गुरु साहब चले आये। दशम् गुरु साहब का बाजीराव पेशवा खानदान में आना जाना था। शाम राव पेशवा तुलसी साहब बने, Link (लिंक) रहा न? तुलसी साहब से स्वामी जी महाराज का आपस में संबंध था। वह (तुलसी साहब) उन (स्वामीजी) को मुंशी जी कहते थे। ये Souls higher (ऊंची रूहें) होते हैं, Developed (विकसित) होते हैं, बने बनाये आते हैं, मगर शराबी का प्यार शराबी ही से होगा न, अनुभवी पुरुष का प्यार अनुभवी पुरुष से होगा। सो तुलसी साहब के बाद स्वामी जी महाराज ने इस तालीम को जो छिप रही थी, गुप्त हो रही थी, उसको ताज़ा किया। एक एक मज़मून को खोल खोल कर समझाया है। पहले उन्होंने तालीम गुरु ग्रंथ साहब से ही दी। स्वामी जी महाराज स्वयं कहते हैं गुरबाणी पेखो, तुलसी साहब का, सबका ज़िक्र किया है उन्होंने। कहते हैं मैं वही बात कह रहा हूं जो सबने ब्यान की है। सो इसके बाद सिलसिला चला, कुछ दयाल बाग में, कुछ इधर स्वामी बाग में। स्वामी जी महाराज आप पांच नाम का सिमरण दिया करते थे। तो गुरु भक्त के लिए हमेशा ही गुरु, प्रभु ही का रूप होता है। स्वामी जी और सारे महापुरुष उसका नाम लेते हैं, उस हकीकत का नाम राधास्वामी कर के ब्यान किया जो हर एक के लिए एक हव्वा बन रहा है। शुरू शुरू में मैं जब गया तो कहने लगे, ''यह लफ्ज़ क्या है?'' मैंने कहा, ''यह परमात्मा के दरवाज़े पर एक हव्वा रखा है कि कोई अंदर न दाखिल होने पाये।''

अरे भई, उस परमात्मा के अनेकों नाम महापुरुषों ने रखे, दशम् गुरु साहब ने हज़ारों नाम रखे। एक और महापुरुष आया, उसने एक और नाम रख दिया। भई हमारे मन में सब नामों के लिए इज़्ज़त है। आखिर ये अक्षरी नाम हैं उस हकीकत का बोध कराने के लिए जो सबसे Highest (ऊंची) है, इससे चलना है, चलो जो गुरु नाम दे दे उसकी कमाई करोः

गुर बचनी हर नाम उचरो॥

यह ब्यान मैंने क्यों कहा? हमारी ग़र्ज़ तो हकीकत से है, पानी से। अगर तुम्हें पानी ''वाओ'' कर के मंज़ूर है तो ''वाओ'' कर के ले लो, अगर आपको जल कर के मंज़ूर है तो जल कर के ले लो मगर पियो पानी ज़रूर। जब तक नहीं पियोगे, शांति नहीं आयेगी। It is the water of life. It is the bread of life (यह जीवन का पानी है और जीवन की रोटी है)। इसके पीने के बगैर प्यास नहीं बुझेगी, इसके खाने के बगैर भूख नहीं जायेगी। उपनिषद जो कहता है, वह क्या चीज़ है जिसके पाने से सब कुछ पाया हुआ सा हो जाता है। वह क्या चीज़ है? वह यही चीज़ है। क्राईस्ट को एक Spartan lady (नीची जाति की) मिली। प्यास लगी हुई थी उन्हें। कहने लगे, ''पानी पिला दो।'' वह छोटी ज़ात की थी, उनमें Inferiority complex (छोटापन) होता है न, वह झिझकी तो खुद ही आगे बढ़कर पानी पी लिया। कहने लगे, ''तूने मुझे पानी पिलाया है, तुम मेरे पास आओ मैं तुम्हें ज़िंदगी का पानी दूंगा।''

तो महापुरुषों के पास यह ज़िंदगी का पानी है जिसको हम नाम कहते हैं, शब्द कहते हैं, अमृत कहते हैं, महारस कहते हैं, कलमा भी कहते हैं। सबके घट घट में है वह मगर इंद्रियों के घाट से ऊपर आकर उसका Contact (संपर्क) मिलता है। यह है Digest (निचोड़) थोड़े लफ़्ज़ों में सब महापुरुषों की तालीम का और हर एक महापुरुष ने इसका ज़िक्र किया है। गीता में पढ़िए, वहां छठे और सातवें अध्याय में क्या ज़िक्र किया है? कि अंतर में देवयान नूर के मार्ग में रूह घिर सी जाती है। There is no way out. (उससे निकलने का कोई रास्ता नहीं।) वहां श्रुति मार्ग काम करता है, मददगार होता है और फिर कदम-दर-कदम किसी

ऐसे अनुभवी पुरुष की ज़रूरत है जो तुम्हें वहां भी गाइड करे और यहां भी गाइड करे। पहाड़ों, जंगलों, बियाबानों में जाओ, वहां भी करे और जब आप जीते जी या मर कर जिस्म छोड़कर ऊपर रूहानी मंडलों में जाओ तो वहीं भी मदद करें।

बा तो बाशद अज़ मकानो लामकां।
चूं बिमानी अज़ सराओ अज़ मकां॥

जो तुम्हारे साथ रहे इस दुनिया में और इस दुनिया को छोड़कर मर कर भी तुम्हारे साथ रहे। जिस में यह समर्था है उसका नाम साधु, संत और महात्मा है।

ये (महात्मा) हमेशा रहते हैं Supply and demand (पूर्ति और मांग) का नियम अटल है, हमेशा से रहा और हमेशा रहेगा। महापुरुषों की तालीम पर Live up (अमल) करो। मैंने जब Unesco Conference (युनेस्को कान्फ्रेंस) में यहां Talk दी थी उसमें भी यही कहा था। धर्म-पुस्तकें सब ठीक कहती हैं। हमें यह Learn करना है, सीखना है कि How to live upto them (उन पर हम कैसे अमल करें)। जितना जितना हम उसे (धर्म पुस्तकों के उपदेश को) अपनी ज़िंदगी का हिस्सा बनाएंगे उतना हम शांति को पा जायेंगे। तो यह है तालीम जो आपके सामने रखी गई है।

◆◆◆◆◆

हजूर सन्त कृपाल सिंह जी महाराज के जीवन की प्रमुख घटनाएँ

1894 – 6 फरवरी, सन्त कृपाल सिंह जी का जन्म, ग्राम सैयद कसरां, जिला रावलपिंडी (पंजाब) जो अब पाकिस्तान में है, में संभ्रांत सिख परिवार में हुआ। इनके पिताजी का नाम सरदार हुक्म सिंह दुग्गल और माताजी का नाम श्रीमती गुलाब देवी था।

1910 – एडवर्डस चर्च मिशन हाई स्कूल, पेशावर से ग्रेजूएशन।

– पहले परमात्मा बाद में दुनिया, इसका निश्चय किया।

– कृष्णावन्ती से शादी।

1912 – पहले मिलिटरी इंजीनियरिंग सर्विस और बाद में मिलट्री अकाउंट्स डिपार्टमेंट (लाहौर) में नौकरी।

1917 – ध्यानावस्था में, उन्हें हजूर बाबा सावान सिंह जी महाराज के दर्शन होने लगे जिन्हें वे गुरु नानक जी समझते थे।

1919 – इन्फ्लूएंजा एपीडेमिक के रोगियों की सेवा और इलाज के के लिये एक समाजसेवी दल का गठन किया और साथ में मरने वालों की अंत्येष्ठी का कार्य भी चलता रहा।

1921 – 14 सितंबर, पुत्र दर्शन सिंह का जन्म, काउटरिला, जिला रावपिंडी में हुआ।

1924 – फरवरी, हजूर बाबा सावन सिंह जी महाराज से ब्यास में शारीरिक भेंट हुई और उनसे नामदान की दीक्षा मिली।

1927 – हजूर बाबा सावन सिंह जी महाराज के महासमाधि में प्रवेश का सम्पूर्ण दृश्य देखा जो 21 साल बाद में घटित हुआ।

– पुत्र जसवंत सिंह का जन्म।

1935 – अपने सतगुरु बाबा सावन सिंह जी महाराज के नाम पर ''गुरमत सिद्धांत'' का प्रकाशन शुरू जो उन्होनें ''गुरमुखी'' में लिखा था।

1939 – हजूर बाबा सावन सिंह जी महाराज की आज्ञा से और उनकी उपस्थिति में डेरा बाबा जैमल सिंह, ब्यास में ढाई सौ से ज्यादा जीवों को नामदान की दीक्षा दी।

1947 – मार्च, छत्तीस साल की नौकरी के बाद, मिलट्री एकाउंट्स के डिप्टी असिस्टेंट कंपट्रोलर के पद से सेवानिवृत्त हुए।

– 12 अक्टूबर, हजूर बाबा सावन सिंह जी महाराज ने सन्त कृपाल सिंह जी से कहा, "मेरे बाद तुम्हें ही नामदान का बड़ा कार्य करना है।"

– नियोजित "रूहानी सत्संग" को हजूर बाबा सावन सिंह जी महाराज ने स्वीकृति दे दी। इसका नियोजन सन्त कृपाल सिंह जी ने किया था।

1948 – 28 मार्च, डेरा बाबा जैमलसिंह, ब्यास में हजूर बाबा सावन सिंह जी महाराज के समक्ष एक सत्संग किया। यह इनके जीवन का डेरे में आखरी सत्संग था।

– 1 अप्रैल, अपने सतगुरु से आखरी मुलाकात। सतगुरु ने अपने दिव्य चक्षु द्वारा अपनी रूहानी ताकत, आध्यात्मिक शक्ति सन्त कृपाल सिंह जी महाराज को प्रदान की।

– 2 अप्रैल, हजूर बाबा सावन सिंह जी महाराज ने अपना चोला छोड़ दिया।

– 6 अप्रैल,सन्त कृपाल सिंह जी, डेरा बाबा जैमलसिंह, ब्यास छोड़कर दिल्ली चले आये। दिल्ली में कुछ दिन रहकर ऋषिकेश चले गये, वहां पर पाँच माह तक एकांत साधना में रहे। बाद में अनेकों साधु–संतों से उनका मिलना हुआ।

– 2 दिसम्बर, दिल्ली में उन्होंने नामदान का अपना नियोजित कार्य प्रारंभ किया। वह नियमित रूप से चलने लगा।

1950 – हजूर बाबा सावन सिंह जी महाराज की आज्ञा और मार्गदर्शन के अनुसार सन्त कृपाल सिंह जी ने "रूहानी सत्संग" की स्थापना की।

1951 – 11 जून, शक्ति नगर, दिल्ली में अपने सत्गुरु की याद में "सावन आश्रम" समर्पित किया।

1954 – दिसम्बर, "सत्संदेश" पत्रिका का हिन्दी और उर्दू भाषा में प्रकाशन शुरू हो गया।

1955 – 31 मई, पहली विश्व यात्रा के लिये दिल्ली से प्रस्थान।

– 5 नवंबर, विश्व यात्रा पूरी करके दिल्ली वापस आये।

1957 – दिल्ली में रामलीला मैदान में पहली विश्वधर्म परिषद में उसके सम्मानीय अध्यक्ष पद पर निर्विरोध नियुक्ति हो गई।

1958 – पाकिस्तान की पहली यात्रा।

1960 – कलकत्ता में दूसरी विश्वधर्म परिषद् में भी सन्त कृपाल सिंह जी महाराज को सर्वसम्मति से दोबारा अध्यक्ष पद पर मनोनीत किया गया।

1962 – सन्त कृपाल सिंह जी महाराज को जो एक पहले गैर-इसाई सन्त थे, जिन्हें पहली बार "सेंट ऑफ जेरूसलम-नाईट ऑफ मालटा" के सम्मान से निवाजा गया।

– 6 अक्टूबर, स्वतंत्र भारत के प्रथम प्रधानमंत्री, पं. जवाहर लाल नेहरू की उपस्थिति में, रामलीला कमेटी, दिल्ली की ओर से गांधी ग्राऊंड के रामलीला मैदान में संत कृपाल सिंह जी महाराज को "भारत का राष्ट्र सन्त" घोषित करते हुए उन्हें रामायण की एक प्रति भेंट की गई।

1963 – 8 जून, दूसरी विश्वयात्रा के लिए दिल्ली से प्रस्थान।

1964 – 31 जनवरी, दूसरी विश्वयात्रा पूरी करके दिल्ली लौटे।

1965 – रामलीला मैदान, दिल्ली में तीसरी विश्वधर्म परिषद में तीसरी बार सन्त कृपाल सिंह जी महाराज की सम्मानीय अध्यक्ष पद पर निर्विरोध नियुक्ति।

1968 – जनवरी, मासिक पत्रिका, "सत्संदेश" का अंग्रेजी और पंजाबी में प्रकाशन शुरू।

– अप्रैल, हरिद्वार के अर्ध कुंभ मेले में महाराज जी ने अपना कैम्प लगाकर लाखों लोगों को सत्संग का लाभ दिया।

– 6 फरवरी, हीरक जयंती महोत्सव समारोह में सम्मान। अनेक सामाजिक, आध्यात्मिक, गणमान्य और भक्तों ने महाराज जी का सम्मान किया।

1970 – 6 फरवरी, देहरादून में "मानव केन्द्र" का उद्घाटन।

– रामलीला मैदान, दिल्ली में चौथे विश्वधर्म परिषद में चौथी बार के महाराज जी की सम्मानीय अध्यक्ष पद पर नियुक्ति।

– 3 अप्रैल, सन्त कृपाल सिंह जी महाराज की धर्मपत्नी माता कृष्णावन्ती का निधन।

– 29 जून, दिल्ली के एक निजी अस्पताल में कामयाब आप्रेशन हुआ।

1972 – 14 मार्च, भारत के राष्ट्रपति वी. वी. गिरी "मानव केन्द्र" देखने आये।

– 26 अगस्त, तीसरी विश्व यात्रा के लिये दिल्ली से प्रस्थान।

1973 – 2 जनवरी, तीसरी विश्वयात्रा से वापस दिल्ली लौट आये।

– 7 फरवरी, भारत के आध्यात्मिक, सामाजिक, राजकीय गणमान्य और प्रतिष्ठित लोगों द्वारा सन्त कृपाल सिंह जी महाराज को विज्ञान भवन, दिल्ली में सम्पन्न हुए समारोह में अभिनंदन पत्र प्रदान करके उन्हें सम्मानित किया।

– 2 अप्रैल, मानव केन्द्र में राष्ट्रीय एकता दिवस मनाया गया। अस्पताल, वृद्ध आश्रम, पाठशाला और फार्म का निर्माण कार्य पूरा हो गया।

– 13 अप्रैल, भारत के उप–राष्ट्रपति जी. एस. पाठक "मानव केन्द्र" देखने आये।

– 14 अप्रैल, यू पी के गवर्नर अकबर अली खान "मानव केन्द्र" देखने आये।

1974 – जनवरी, कंद्री (जिला बड़ौदा) गुजरात में दूसरे "मानव केन्द्र" का उद्घाटन।

– 3–6 फरवरी, दिल्ली में महाराज कृपाल सिंह जी की अध्यक्षता में और उनसे प्रायोजित "मानव एकता सम्मेलन"

में अनेकानेक देशों के विशेष प्रतिनिधियों ने भाग लिया। आस्ट्रेलिया, ऑस्ट्रिया, कनाडा, कोलंबिया, इक्वेडर, इंग्लैंड, फ्रांस, जर्मनी, घाना, ग्रीस, भारत, इंडोनेशिया, इटली, जापान, माल्टा, नाइजीरिया, थाइलैंड और अमेरिका से विशेष प्रतिनिधि समारोह में आये थे।

- 12 अप्रैल, हरिद्वार के कुंभ मेले में, महाराज जी ने "राष्ट्रीयएकता परिषद" की स्थापना की। महाराज जी की अध्यक्षता में पहली बार करीब पांच लाख साधु संत एक साथ बैठे एक मंच पर। राष्ट्रीय एकता का संदेश दूर-दूर तक साधु-संतों द्वारा पहुंचाने का एक प्रस्ताव पारित किया गया।
- 26-27 जुलाई, दिल्ली में महाराज कृपाल सिंह जी ने "राष्ट्रीय संत समागम" का आयोजन किया।
- 29 जुलाई, अंतिम बार 1087 जीवों को नामदान की दीक्षा प्रदान की।
- 1 अगस्त, भारतीय संसद को संबोधित किया। ये पहले आध्यात्मिक महापुरुष हैं जिन्हें भारतीय संसद में सम्मान पूर्वक आमंत्रित किया गया था।
- 15 अगस्त, हिन्दी में आखरी बार सत्संग प्रवचन।
- 17 अगस्त, सावन आश्रम मे आखरी बार अंग्रेजी में प्रवचन।
- 21 अगस्त, महासमाधि में प्रवेश।

***